

## अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (Frequently Asked Question)

**प्रश्न 1. मत्स्य पालन क्यों करें ?**

**उत्तर**

जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में खाद्यान्नों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि नहीं हो रही है। दूध, घी की कमी के कारण हमारे भोजन में मछली की विशेष उपयोगिता है। मीठे पानी की मछली में वसा बहुत कम होती है और इसकी प्रोटीन शीघ्र पचने वाली होती है। आधुनिक शोधों ने यह सिद्ध किया है कि अन्य प्रकार का मांस खाने वालों की अपेक्षा मछली खाने वालों को दिल की बीमारी कम होती है, क्योंकि, यह खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करती है। मछली में 14-25 प्रतिशत प्रोटीन के अतिरिक्त कार्बोहाइड्रेट, खनिज, लवण, कैल्सियम, फास्फोरस, लोहा आदि तत्व भी प्रचुर मात्रा में होते हैं।

**प्रश्न 2. मछली पालन हेतु जानकारी कहाँ से मिलती है ?**

**उत्तर**

मछली पालन हेतु जानकारी प्राप्त करने के लिए जनपद में स्थित मत्स्य पदाधिकारी कार्यालय या मत्स्य/मुख्य कार्यकारी अधिकारी से भी संपर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

**प्रश्न 3. मत्स्य पालन हेतु तालाब तैयारी का उचित समय क्या है ?**

**उत्तर**

मत्स्य पालन प्रारम्भ करने से पूर्व अप्रैल, मई एवं जून माह में तालाब मत्स्य पालन हेतु तैयार किया जाता है।

**प्रश्न 4. मछली पालन में कौन-कौन सी मछलियाँ पाली जाती हैं ?**

**उत्तर**

मछली पालन में मुख्य रूप से 6 प्रकार की मछलियाँ पाली जाती हैं यथा भारतीय मेजर कार्प में रोहू, कतला, मृगल (नैनी) एवं विदेशी मेजर कार्प में सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प तथा कॉमन कार्प मुख्य हैं। कुछ दुसरी प्रजाति की मछलियाँ जैसे पंगासीअस, तिलापिया और चीतल को भी पाला जा सकता है।

**प्रश्न 5. मछली पालन हेतु बीज कहाँ से प्राप्त होता है ?**

**उत्तर**

मछली पालन हेतु बीज प्राप्त करने हेतु जिला मत्स्य पदाधिकारी से सम्पर्क किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय में मत्स्य बीज का पैसा जमा कराकर सीधे निगम की हैचरी से अपने साधन से मत्स्य बीज तालाब में डाल सकता है।

**प्रश्न 6. क्या मछली पालन हेतु मत्स्य विभाग से कोई ऋण दिया जाता है ?**

**उत्तर**

नहीं , अनुदान दिया जाता है यह अनुदान मुख्यमंत्री मत्स्य विकास योजना के अंतर्गत दी जाती है | अपितु मछली पालन हेतु तालाब निर्माण ,बाँधों की मरम्मत , पूरक आहार , आदि मदों हेतु विभाग द्वारा बैंक से ऋण हेतु प्रस्ताव तैयार कराकर प्रेषित किया जाता है |

**प्रश्न 7. क्या ऋण पर कोई अनुदान भी दिया जाता है ?**

**उत्तर**

बैंक द्वारा लिए गए ऋण की धनराशि हेतु सामान्य जातियों को 40 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति / जनजातियों के मत्स्य पालकों को 50 प्रतिशत विभाग द्वारा अनुदान दिया जाता है | अनुदान की राशि विभिन्न परियोजना के अंतर्गत भिन्न-भिन्न होती है |

**प्रश्न 8. क्या मछलियों में बीमारी भी लगती है ?**

**उत्तर**

हाँ , मछलियों में भी बीमारी होती है | मछलियों में मुख्यतः फुफुंद ,जीवाणुओं ,प्रोटोजोआ परजीवियों ,कृमियों ,हिरुडूनिया आदि द्वारा बीमारी उत्पन्न होती है। बीमारी की जानकारी जिला प्रशिक्षण केन्द्र , तकनीकी केन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं |जिसके निदान हेतु जिला मत्स्य पदाधिकारी से , जनपद कार्यालय में सम्पर्क कर आधिकारियों /कर्मचारियों से तकनीकी जानकारी प्राप्त कर उसके उपचार करना चाहिए |

**प्रश्न 9. क्या मछली पालन हेतु मिट्टी पानी की जाँच भी होती है ?**

**उत्तर**

मछली पालन हेतु मिट्टी एवं पानी की जाँच होती है जिसके लिए मत्स्य पालक जनपद के मत्स्य पालक जिला मत्स्य पदाधिकारी के कार्यालय में मिट्टी एवं पानी के नमूने उपलब्ध कराकर मिट्टी ,पानी की निःशुल्क जाँच करा सकते हैं ताकि जाँच के आधार पर आधिकारी /कर्मचारी से तकनीकी सलाह प्राप्त कर मछली पालन व्यवसाय सकते हैं |

**प्रश्न 10. मत्स्य आहार की समयावधि क्या होनी चाहिए ?**

**उत्तर**

आहार की अवधि जुलाई से नवम्बर एवं फरवरी से शिकारमाहि के पूर्व तक होनी चाहिए |

**प्रश्न 11. मछलियों को आहार देने का क्या समय होना चाहिए ?**

**उत्तर**

मत्स्य आहार का समय निर्धारण सुबह या शाम को करना चाहिए व एक निश्चित समय पर ही उन्हें आहार देना चाहिए |

**प्रश्न 12. मत्स्य आहार कितने प्रकार के होते हैं ?**

**उत्तर**

मत्स्य आहार दो तरह के होते हैं (1) फार्म्युलेटेड मत्स्य आहार (2) स्वयं का तैयार किया हुआ आहार । फार्म्युलेटेड मत्स्य आहार किसी भी आहार बनाने वाली व्यावसायिक कंपनी से खरीदी जा सकती । फार्म्युलेटेड आहार उपलब्ध न होने पर चावल का कना और सरसों की खली का मिश्रण तैयार कर मत्स्य आहार स्वयं तैयार किया जा सकता है।

**प्रश्न 13. मछलियों को आहार किस प्रकार देना चाहिए ?**

**उत्तर**

मत्स्य आहार को टोकरी में तालाब के चारों किनारे व बीच में पानी की सतह पर रखना चाहिए। यदि आहार का उपभोग कम हो तो यह जांच करनी चाहिए कि मछलियां किसी बीमारी से पीड़ित तो नहीं हैं।

**प्रश्न 14. मत्स्य पालन कौन-कौन कर सकता है ?**

**उत्तर**

कोई भी इच्छुक व्यक्ति जिसके पास निजी भूमि या तालाब अथवा पट्टे का तालाब हो मत्स्य पालन कर सकता है। विभाग द्वारा सुविधायें प्राप्त करने के लिए इच्छुक व्यक्ति मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं।

**प्रश्न 15. मत्स्य पालन करने के लिए विभाग द्वारा किन-किन व्यक्तियों को सहायता मिलती है ?**

**उत्तर**

मत्स्य पालन हेतु किसी भी इच्छुक व्यक्ति को सहायता प्रदान की जाती है।

**प्रश्न 16. मत्स्य पालन हेतु पट्टा आवंटन में किसे वरीयता दी जाती है ?**

**उत्तर**

मत्स्य पालन हेतु पट्टा आवंटन में मछुआ समुदाय के लोगों को वरीयता दी जाती है।

**प्रश्न 17. ग्राम सभा का पट्टा कैसे आवंटन होता है ?**

**उत्तर**

ग्राम सभा का पट्टा आवंटन हेतु ग्राम सभा द्वारा प्रस्ताव तैयार कर तहसीदार/ उप जिलाधिकारी को प्रेषित किया जाता है जिनके द्वारा पट्टा निर्गमन की तैयारी की जाती है।

**प्रश्न 18. पट्टा धारक को आर्थिक सहायता/ऋण कहां से प्राप्त हो सकता है ?**

**उत्तर**

पट्टाधारक जनपद स्तरीय मत्स्य कार्यालय में सम्पर्क कर सकते हैं जिसके द्वारा ऋण हेतु प्रस्ताव बैंक को प्रेषित किया जाता है।

**प्रश्न 19. मत्स्य पालन के लिए क्या आर्थिक सहायता विभाग द्वारा दी जाती है ?**

**उत्तर**

नये तालाब निर्माण एवं प्रथम बार के उत्पादन निवेश हेतु 40 प्रतिशत की दर से सामान्य किसानों को ₹ 7,00,000/- एवं ₹ 5,00,000/- प्रति हेक्टेयर क्रमशः तथा अनुसूचित एवं जनजाति के व्यक्तियों के लिए 90 प्रतिशत अनुदान की दर से प्रति हेक्टेयर की दर से अनुदान दिया जाता है।

**प्रश्न 20. मत्स्य संचय का उपयुक्त समय क्या होता है ?**

**उत्तर**

भारतीय मेजर कार्प के मत्स्य बीज हेतु माह जुलाई से सितम्बर तक का समय मत्स्य संचय हेतु उपयुक्त होता है। कामन कार्प का मत्स्य बीज मार्च/अप्रैल में संचित किया जाता है।

**प्रश्न 21. मछलियों को कितना मत्स्य आहार देना चाहिए ?**

**उत्तर**

मछलियों को उनके शारीरिक वजन के 2-3 प्रतिशत अनुपात में मत्स्य आहार देना चाहिए।

**प्रश्न 22. तालाब की सफाई कब और कैसे करनी चाहिए ?**

**उत्तर**

तालाब की सफाई संचय के पूर्व अप्रैल या मई माह में करनी चाहिए। तालाब की सफाई हेतु ट्रैक्टर से अच्छी तरह जुताई करके चूना या गोबर की खाद डालने के 15 दिन बाद पानी भरकर तथा उसके 15 दिन बाद मत्स्य संचय करना चाहिए।

**प्रश्न 23. तालाब से पानी की निकासी कब करनी चाहिए ?**

**उत्तर**

तालाब से पानी की निकासी बरसात में गंदा पानी या सीवर का पानी आ जाने पर अथवा मछलियों के रोग ग्रसित होने पर की जानी चाहिए।

**प्रश्न 24. यदि तालाब में मछली मर जाय तो क्या करें ?**

**उत्तर**

यदि तालाब में मछली मर जाय तो उसे जला देना चाहिए अथवा जमीन में गाड़ देना चाहिए। ऐसी मछली को बाजार में विक्रय हेतु कभी नहीं ले जाना चाहिए।

**प्रश्न 25. एक हेक्टेयर तालाब में कितना मत्स्य बीज संचय किया जाना चाहिए ?**

**उत्तर**

25-50 मि०मी० आकार के 10 हजार से 15 हजार मत्स्य बीज प्रति हेक्टेयर संचय किया जाना चाहिए।

**प्रश्न 26. कौन सी मछली पालन हेतु प्रतिबन्धित है और क्यों ?**

**उत्तर**

प्रदेश में थाई मांगुर का पालन प्रतिबन्धित है क्योंकि मांसाहारी होने के कारण तालाब में पाली गयी मछलियों को नुकसान पहुंचाती है।

**प्रश्न 27. विभाग द्वारा मत्स्य पालन हेतु क्या प्रशिक्षण दिया जाता है ?**

**उत्तर**

विभाग द्वारा मत्स्य पालन, मत्स्य बीज संचय, रखरखाव मत्स्य पालन में अपनायी जा रही नवीनतम तकनीकों एवं विपणन आदि पर विस्तृत जानकारी मत्स्य विभाग द्वारा या तो राज्य में या राज्य के बाहर मत्स्य शोध संस्थान अथवा राज्य प्रशिक्षण केंद्र मीठापुर ,पटना में निशुल्क दी जाती है।

**प्रश्न 28. क्या प्रशिक्षण के दौरान किसी प्रकार की आर्थिक सहायता का प्रवधान है ?**

**उत्तर**

मछली पालन हेतु प्रत्येक जनपद के मत्स्य पालक विकास अभिकरण द्वारा प्रशिक्षणार्थी को रू० 100/- प्रशिक्षण भत्ता प्रति दिन तथा एक मुश्त रू० 100/- भ्रमण भत्ता विभाग की ओर से दिया जाता है।

**प्रश्न 29. प्रदेश में कौन-कौन से उपलब्ध जलक्षेत्र हैं और उनका क्षेत्रफल क्या है ?**

**उत्तर**

**उत्तर**

प्रदेश में उपलब्ध जल संसाधन के रूप में 3200 कि०मी० नदी , 9,41,000 हेक्टेयर चौर और फ्लडप्लेन वेटलैंड, 9000 हेक्टेयर गोखुर झील , 26304 हेक्टेयर जलाशय, 93,218 हेक्टेयर तालाब हैं।

**प्रश्न 30. संचय के समय क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए ?**

**उत्तर**

मत्स्य बीज संचय के समय आक्सीजन पैक से भरे बीज को तालाब में कुछ देर के लिए छोड़ देना चाहिए ताकि पैक का तापमान तालाब के जल के तापमान के अनुरूप हो जाय ताकि मत्स्य बीज को तापमान में अंतर के कारण नुकसान न हो। संचय धूप में नहीं करना चाहिए।

**प्रश्न 31. मत्स्य पालन के लिए कौन-सी मिट्टी उपयुक्त है ?**

**उत्तर**

चिकनी मिट्टी वाली भूमि के तालाब में मत्स्य पालन सर्वथा उपयुक्त होता है। इस मिट्टी में जलधारण क्षमता अधिक होती है। मिट्टी की पी-एच 6.5-8.0, आर्गेनिक कार्बन 1 प्रतिशत तथा मिट्टी में रेत 40 प्रतिशत, सिल्ट 30 प्रतिशत व क्ले 30 प्रतिशत होना चाहिए।

**प्रश्न 32. मत्स्य पालन हेतु विपणन की क्या व्यवस्था है ?**

**उत्तर**

अभी राज्य में मत्स्य उत्पादों के लिए कोई ठोस विपणन की व्यवस्था नहीं है ।

**प्रश्न 33. मत्स्य पालन के साथ और कौन-कौन से कार्य किये जा सकते हैं ?**

**उत्तर**

समन्वित मत्स्य पालन योजनान्तर्गत बत्ख,मुर्गा, पशु, सुअर आदि पालन किया जा सकता है जिसके साथ ही बन्धों पर पपीता, केला, साग सब्जी भी उगाये जा सकते हैं जिससे बन्धें मजबूत होते हैं और अतिरिक्त आय भी होती है।

**प्रश्न 34. मत्स्य उत्पादन बढ़ाने के लिए किन अन्य उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है ?**

**उत्तर**

मत्स्य उत्पादकता को बढ़ाने हेतु ऐरेटर स्थापित किया जा सकता है। ऐरेटर स्थापित करने हेतु एक हे० जलक्षेत्र के लिए रू० 1,00,000/- प्रति यूनिट दो हार्सपावर के दो ऐरेटर/एक पांच हार्सपावर का डीजल पम्प से चालित ऐरेटर स्थापित किया जा सकता है।

**प्रश्न 35. मत्स्य विभाग के तालाबों की नीलामी की क्या व्यवस्था होती है ?**

**उत्तर**

विभाग के द्वारा तालाबों की नीलामी जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा की जाती है जिसमें विभाग के जनपदीय अधिकारी सदस्य होते हैं। इन तालाबों को केवल मछुआ समुदाय के लोगों को ही दिया जाता है । इसके बारे में ज्यादा जानकारी जिला मत्स्य कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है ।

**प्रश्न 36. मत्स्य पालन हेतु मत्स्य बीज किस अनुपात में संचित करना चाहिए ?**

**उत्तर**

मत्स्य पालन हेतु मत्स्य बीज संचय दो प्रकार किया जाता है। यदि केवल भारतीय मेजर कार्प का संचय किया जाना हो तो कतला 40 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत एवं नैन 30 प्रतिशत के अनुपात में तथा यदि भारतीय मेजर कार्प के साथ विदेशी कार्प मछलियों का संचय किया जाना हो तो कतला 30 प्रतिशत, रोहू 30 प्रतिशत, नैन 20 प्रतिशत एवं विदेशी कार्प 20 प्रतिशत का अनुपात रखा जाता है।

**प्रश्न 37. जिल तालाबों को सुखाया नहीं जा सकता उसकी तैयारी कैसे करें ?**

**उत्तर**

मौजूदा तालाबों में मत्स्य पालन करने से पूर्व अवांछनीय वनस्पति एवं मछलियों की निकासी आवश्यक है। जलीय खर-पतवार ,वनस्पतियां तथा खाऊ मछलियों को हटाने के लिए 25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्रति मीटर पानी की गहराई की दर से महुआ की खली का प्रयोग कर अथवा बार-बार जाल चलाकर निकाली जा सकती हैं।